thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853116
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
वर्ष : 11 अंक : 43 रोहतक, 14 अप्रैल, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्यसमाज सत्य-ज्ञान से पूर्ण एक वैश्विक धार्मिक संस्था

❑ मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज ईश्वर प्रदत्त, संसार के सबसे प्राचीन, सत्य-ज्ञान व तर्क पर पूर्णतया आधारित वैदिक धर्म का विश्व में प्रचार-प्रसार करने वाली अपनी तरह की एकमात्र वैश्विक धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था है। अन्य देशी व विदेशी संस्थायें जो संसार में अपने-अपने धर्म व मतों का प्रचार करती हैं, वह अज्ञान व अन्धविश्वासयुक्त होने के कारण आर्य समाज की तुलना में अत्यन्त हेय हैं। आज के वैज्ञानिक युग में यदि कोई धर्म या मत लोगों की इच्छाओं व आकांशाओं के साथ उनके प्रत्येक प्रश्न का ज्ञान व तर्कपूर्ण वैज्ञानिक समाधान कर सकता है तो वह केवल आर्य समाज वा महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक धर्म ही है। आर्य समाज के 10 नियमों में तीसरा नियम है- **"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"** इसका अर्थ हुआ कि वेद में सभी सत्य विद्यायें अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्य स्वरूप, इनके कार्य, उपयोगिता व अवस्थान्तर आदि स्थितियों का सत्य-सत्य ज्ञान है। इसके साथ ही धर्म, मनुष्यों के कर्तव्यों व जीवनशैली आदि का यथार्थ ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई के गिरिगांव मोहल्ले के काकड़वाडी स्थान में की थी। महर्षि दयानन्द को आर्य समाज की स्थापना की आवश्यकता क्यों पड़ी ? इसका उत्तर है कि उनके समय में ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्य स्वरूप व इनके विविध धर्म व व्यवहार आदि देश व विश्व में दृष्टि से ओझल हो चुके थे और सभी लोग अज्ञान व अन्धविश्वासों से ग्रसित होकर अपने जीवन के उद्देश्य से भटके हुए थे जिस कारण से वह सब नाना प्रकार के दुःखों से ग्रसित थे। अतः सत्य के ज्ञानी महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी के परामर्श वा आज्ञा का पालन करने के लिए देश व संसार से अज्ञान व अन्धविश्वास आदि को मिटाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

महर्षि दयानन्द ने सन् 1863 में मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती जी से वेद व्याकरण का अध्ययन पूरा कर कर्मक्षेत्र में पदार्पण किया था। आर्य समाज की स्थापना तक वह प्रायः मौखिक प्रचार, उपदेश-प्रवचन-शंका समाधान-वार्तालाप आदि के द्वारा ही वेदों का सन्देश प्रचारित करते थे। समस्त देश व विश्व में अज्ञान व अन्धविश्वास अपने चरम पर होने के कारण उनको असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों आदि का खण्डन करना पड़ता था। इस खण्डन के साथ आप खण्डित मान्यताओं व सिद्धान्तों के विपरीत सत्य वैकल्पिक मान्यतायें व सिद्धान्तों का श्रोताओं को उपदेश भी करते थे। वह जो बोलते थे उसका एक एक शब्द महत्वपूर्ण होने के कारण संग्रहणीय होता था परन्तु खेद है कि उनके सभी प्रवचनों का संरक्षरण न हो सका। स्वामी दयानन्द के उपदेशों को सुनकर श्रोताओं को धर्म-ज्ञान व विविध लाभ तो अवश्य होते थे परन्तु समय व्यतीत होने के साथ प्रवचनों आदि का प्रभाव कुछ कम होकर व उनके उपदेशों में कही गई अधिकांश बातों की विस्मृति हो जाया करती थी। अतः मई, 1874 में महर्षि दयानन्द द्वारा काशी में उपदेश करते हुए यहां के डिप्टी कलक्टर राजा जयकृष्ण दास ने उनसे कहा कि महाराज ! आप जो प्रवचन करते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। उनकी रक्षा होनी चाहिये जिससे इनका लाभ वह लोग भी उठा सकें जो किन्हीं कारणों से आपके उपदेशों में सम्मिलित नहीं हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त उपदेश सुनने के कुछ समय बाद वह श्रोताओं की स्मृति से अंशतः विस्मृत हो जाते हैं। अतः उन्होंने महर्षि दयानन्द को अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक सारगर्भित ग्रन्थ लिखने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द को उनका यह सुझाव पसन्द आया और उन्होंने उसे तत्काल स्वीकार कर लिया। आगे हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द ने **'सत्यार्थप्रकाश'** नाम के एक ग्रन्थ का लेखन आरम्भ करा दिया। यह ग्रन्थ तैयार होकर सन् 1875 में प्रकाशित हुआ जिसमें वेदों की शिक्षाओं, मान्यताओं व शिक्षाओं सहित उपनिशद, दर्शन, मनुस्मृति आदि अनेकानेक ग्रन्थों के उद्धरण दिये गये हैं तथा गूढ़ विचारों, सिद्धान्तों व मान्यताओं को प्रचलित सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया गया है जिसे एक साधारण हिन्दी भाषा पठित व्यक्ति भी आसानी से जान व समझ सकता था। इसके बाद समय-समय पर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित होते रहे। इससे पूर्व धार्मिक सिद्धान्तों व मान्यताओं को समझने की यह सुविधा उपलब्ध नहीं थी। अतः सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से धर्म व वेद प्रचार के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी कार्य सम्पन्न हुआ। आज देश विदेश के आर्य समाजियों व नये सदस्यों का मुख्य आधार यही ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश होता है।

आर्यसमाज की स्थापना के बाद देशभर में आर्यसमाज की इकाईयां स्थापित होने लगी। आर्यसमाज के अनुयायियों सहित विद्वानों की संख्या में भी वृद्धि होती रही और देश भर में आर्यसमाज मन्दिरों में सन्ध्या व हवन सहित आर्य विद्वानों के वेद प्रवचन व शंका समाधान आदि होते रहे। वेद भाष्य सहित नये-नये ग्रन्थों का सृजन व प्रकाशन हुआ तथा आर्य समाजों ने स्थान-स्थान से हिन्दी व उर्दू भाषा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया। विपक्षियों व विधर्मियों से शास्त्रार्थ एवं वार्तालाप आदि भी होते थे। इन शास्त्रार्थों की श्रृंखला का आरम्भ महर्षि दयानन्द के नवम्बर, 1869 में वेदों में मूर्तिपूजा विषय पर काशी के दिग्गज लगभग 30 शीर्षस्थ विद्वानों से अकेले किये गये शास्त्रार्थ से होता है जिसमें महर्षि दयानन्द का पक्ष अकाट्य रहा। 30 अक्तूबर, 1883 तक लगभग 59 वर्षों से कुछ कम अवधि के अपने जीवन काल में महर्षि दयानन्द ने देश भर में विपक्षियों से अनेक शास्त्रार्थ, शंका समाधान व वार्तालाप के द्वारा लोगों की धर्म सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान किया। राजे-रजवाड़ों को धर्म उपदेश से उपकृत किया। देश के सभी मतों के विद्वानों व विशिष्ट पुरुषों से मिलकर उन पर वेदों की महत्ता का स्वरूप उद्घाटित किया। बहुत से लोगों ने अपना पूर्व मत वा धर्म त्याग कर वैदिक धर्म को स्वीकार किया। ऐसे अनेक उदाहरण सभी प्रमुख मतों से जुड़े हुए हैं।

देश भर में प्रचार कार्य सुगमता से चल रहा था। हमारे विद्वानों का ध्यान वेद मन्त्र **'ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो ऽराव्णः।।** ऋ.9/63-5' की ओर भी गया। इसके पालनार्थ भारत से आर्य विद्वानों ने विदेशों में जाकर व बाद में वहां निवास करनेवाले सुधी व्यक्तियों व विद्वानों ने वेद प्रचार करने का प्रशंसनीय कार्य किया जिससे वहां अनेक स्थानों

क्रमशः पृष्ठ 2 पर....

thearyasamaj.org

आर्यसमाज सत्य-ज्ञान से पूर्ण.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

पर आर्यसमाज स्थापित हो सके। इन प्रचारकों की सूची बहुत लम्बी हैं। कुछ प्रमुख नाम हैं-श्यामजीकृष्ण वर्मा, उद्योगपति सेठ नान जी भाई कालिदास मेहता, मेहता जैमिनी, मौरीशस के प्रधान-मंत्री श्री शिवसागर रामगुलाम, डा. चिरंजी लाल भारद्वाज, स्वामी श्रुवानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी शंकरानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, भाई परमानन्द, पं. रुचिराम आर्य, पं. भवानी दयाल संन्यासी, स्वामी अभेदानन्द, पं. सत्यपाल सिद्धान्तालंकार तथा पं. ईश्वरदत्त विद्यालंकार आदि। आज अमेरिका, इंग्लैण्ड, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, हालैण्ड, मारीशस, सूरीनाम आदि अधिकांश देशों में आर्य समाज स्थापित हैं जहां नियमित रूप से सत्संग होने तथा भारतीय पर्व मनाने के साथ आर्य महासम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। विदेशों में ही आर्य पुरोहित व प्रवचनकर्ता विद्वान भी सुलभ हैं। भारत से भी अनेक विद्वान विदेशों में प्रवचनार्थ जाते रहते हैं। विदेशों में विश्व आर्य महासम्मेलन प्रायः प्रत्येक वर्श आयोजित होते रहते हैं जिनमें भारत सहित अन्य देशों के प्रतिनिधि भी भाग लेते हैं।

विदेशों में वेद प्रचार की दृष्टि से आर्य समाज को अभी बहुत बड़ा मार्ग तय करना है। हमारे विदेशी भाई वेद व आर्य समाज की विचारधारा की महत्ता को अभी भली प्रकार समझ नहीं पा रहे हैं। इस कार्य को गति देने के लिए हमें प्रचार के सभी माध्यमों का प्रयोग करते हुए सघन व प्रभावशाली प्रचार की योजना बनानी चाहिये जिससे कि हमारे विदेशी बन्धु आर्यसमाज से जुड़ सकें और यदि न भी जुड़े तो आर्यसमाज की विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों की सत्यता को जानकर उन्हें अपने आचरण में ला सकें। यदि प्रचार उपयुक्त व प्रभावशाली रूप से होगा तो इसका विदेशी बन्धुओं पर अनुकूल प्रभाव अवश्य पड़ेगा। इस सम्बन्ध में हम पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थी जी के एक बार आर्यसमाज अमृतसर के वार्षिकोत्सव पर दिए गए भाषण को प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि स्वामी दयानन्द का ज्ञान लोगों को दो शताब्दियों के पश्चात् होगा जब कि जनसाधारण पूर्वाग्रह छोड़कर उनके साहित्य का अध्ययन करेंगे। अभी लोगों की यह स्थिति नहीं कि उस योगी की बातों को समझ सके। वह यह भी कहा करते थे कि जैसे पांच सहस्र वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध संसार में हुआ था जिसके कारण वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना न रहा, इसी प्रकार अब फिर संसार में एक बौद्धिक महाभारत की तैयारी हो रही है। पूर्व व पश्चिम के मध्य यह बौद्धिक युद्ध होगा। उसके बाद संसार में पुनः वेदों का पठन-पाठन प्रचलित होगा। स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज द्वारा इस बौद्धिक संग्राम का बीज सारे संसार में बो दिया है।

अभी तक हम वेदों का अंग्रेजी व विश्व की अनेक भाषाओं में सरल, सुबोध, प्रभावशाली व आजकल के लोगों की अपेक्षाओं के अनुकूल जिसमें विदेशी बन्धुओं को प्रभावित करने की क्षमता हो, तैयार व प्रकाशित नहीं कर पाये और न ही ऐसी कोई योजना है। जो कार्य हुआ है उसका सुधार व परिमार्जन व परिशोधन होना चाहिये। अभी महर्शि दयानन्द जी का ही हिन्दी भाष्य अपने सरल व प्रभावपूर्ण रूप में प्रकाशित नहीं हुआ है जिसका संकेत व उल्लेख वेदों के मूर्धन्य विद्वान डा. रामनाथ वेदालंकार आदि कर गये हैं। जब तक आर्य समाज की सभी प्रतिनिधि सभायें व परोपकारिणी सभा परस्पर मिल कर कोई ठोस योजना नहीं बनायेंगी तब तक इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने में कठिनाई रहेगी।

आर्यसमाज की स्थापना को 140 वर्ष हो रहे हैं। इस अवधि में आर्यसमाज ने देश से अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, अशिक्षा, सामाजिक असमानता, जन्मना जातिवाद, बाल विवाह, बेमेल विवाह आदि अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसके साथ ही चारों वेदों पर अनेक विद्वानों के द्वारा भाष्यों की रचना, दर्शनों, उपनिषदों व मनुस्मृति आदि पर आर्ष भाष्यों की रचना, समाजोत्थान, भौतिक व वैज्ञानिक प्रगति आदि कार्यों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैदिक सन्ध्या व यज्ञ-अग्निहोत्र को लोकप्रिय बनाने के साथ अगणित परिवारों व संस्थाओं में सन्ध्या व दैनिक यज्ञों का अनुष्ठान सम्पन्न होता है। स्त्रियों को न केवल वेद पढ़ने का अधिकार प्रदान कराया गया है अपितु स्त्रियों को शिक्षा व सभी क्षेत्रों में समान अधिकारों के साथ गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है। देश की आजादी में आर्य समाज की सर्वोपरि महत्वपूर्ण भूमिका थी। गुरुकुलों की स्थापना व उनके विस्तार से संस्कृत विद्या का प्रसार होने के साथ आर्यसमाज को उपदेशक, प्रचारक, लेखक व साहित्यकार मिले हैं। हम अनुभव करते हैं कि देश, जाति, धर्म की उन्नति का ऐसा कोई कार्य ऐसा नहीं है जो आर्यसमाज ने न किया हो या उसमें सहयोग या प्रेरणा न की है। इतना होने पर भी अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विदेशों में भी आर्य समाज का विस्तार हुआ है और भविष्य में इसमें और प्रगति की आशा है। आर्यसमाज का लक्ष्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** है जो ज्ञान व विज्ञान के बढ़ने के साथ शीघ्र प्राप्त होगा जैसा कि आर्य मनीषी पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने आशा व्यक्त की थी जिसे पूर्व उद्धृत किया गया है। वेद प्रचार के लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति में प्रत्येक आर्य सदस्य एवं सदस्या को अपनी आहुति देनी है।

आर्य समाज के स्थापना दिवस की सार्थकता इस बात में है कि हम अपने-अपने आर्यसमाज मन्दिरों में मिलकर अपने कार्यों व प्रचार की कमियों पर विचार करें और सभी प्रकार की कमियों को दूर करने का प्रयास करें। यदि ऐसा करते हैं तो हमारा प्रचार कार्य अधिक प्रभावशाली एवं परिणामदायक हो सकता है। आइये, आर्य समाज स्थापना दिवस पर स्वयं सच्चे आर्य बने और आर्य समाज का अधिक से अधिक प्रचार करने का प्रयास करें व प्रचारकों को सहयोग दें।

नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में हवन-यज्ञ

भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि महिला योग समिति द्वारा रविवार को नवसंवत्सर के उपलक्ष्य में 100 कुंडीय हवन-यज्ञ का आयोजन किया। नगर पालिका के नजदीक स्थित मल्हान पार्क में आयोजित यह कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण व शहीदी दिवस को समर्पित था। कार्यक्रम में हुए यज्ञ के दौरान विभिन्न स्कूलों में अध्ययनरत 200 बेटियों ने एक स्वर में वेद मन्त्रोच्चारण कर कार्यक्रम को आकर्षक बनाया। कार्यक्रम का आगाज मन्दिर बाबा प्रसाद गिरि के महन्त श्री परमानन्द गिरि ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस मौके पर दिल्ली से आर्य इंद्रसिंह वर्मा बतौर मुख्यातिथि तथा झज्जर के लाला महेन्द्र बंसल व विश्वास वेलफेयर सोसायटी के प्रधान प्रवेश छिकारा बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा विवेक गोयल रहे।

गोयल ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि वातावरण में सभी समस्याओं का मूल कारण पर्यावरण प्रदूषण है। उन्होंने कहा कि गोघृत व जड़ी-बूटियों से निर्मित सामग्री से किया गया हवन वातावरण को सुगन्धित कर न केवल कीटाणुओं को नष्ट करता है बल्कि सभी समस्याओं को भी दूर करता है।

कार्यक्रम में महन्त श्री परमानन्द गिरि ने मंत्रोच्चारण करने वाली बेटियों को सम्मानित करते हुए समाज से बेटियों के सम्मान को बनाये रखने की अपील की। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत स्वाभिमान के अध्यक्ष राजबीर सिंह ने की। वहीं इस मौके पर धीरज मल्हाण, पीयूष आर्य, शर्मिला, लाला प्रकाशवीर आर्य, सूर्यप्रकाश सिंघल, मास्टर द्वारिका प्रसाद, पंकज शर्मा, विकास, सुभाष आर्य, सूबेदार भरत सिंह, वैदिक सत्संग मण्डल के प्रधान पंडित रमेश कौशिक व पंडित जयभगवान आर्य सहित बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे।

—सुभाष आर्य,
मोहल्ला भट्टी गेट, झज्जर

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

मैं मुक्ति का पथिक बनूँ

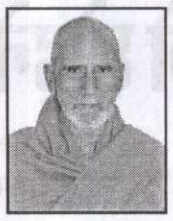

गतांक से आगे....

चित्त में सत्त्व, रज, तम तीनों गुण गौण-प्रधान भाव से बने रहते हैं। जब सत्त्व गुण प्रधान होता है तो रज, तम भी कुछ मात्रा में वहां होते ही हैं जिसके कारण सुख की स्थिति में भी कुछ मात्रा में दुःख भी उसमें मिश्रित रहता है। इसका नाम गुण वृत्ति विरोध दुःख है। जैसे मकड़ी का जाला आँख में पड़ जाये तो पीड़ा का कारण बनता है, अन्यत्र नहीं ऐसे ही सुकोमल चित्त वाले विवेकी जन को ही ये सांसारिक सुख पीड़ित करते हैं, सामान्य लोगों को नहीं।

इन सभी वेदनाओं और दुःखों की निवृत्ति योगाभ्यास से होगी जैसा कि चरक संहिता में कहा है—

योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्।
मोक्षे निवृत्तिर्निश्शेषा योगो मोक्ष प्रवर्तकः॥ (चरक० शा० 1.22)

योग और मोक्ष ही सर्वविध दुःखोंको दूर करने के उपाय हैं। इनकी सम्पूर्ण निवृत्ति मोक्ष प्राप्त कर लेने पर ही होती है। योग मोक्ष का प्रवर्तक अर्थात् प्राप्त कराने वाला है। परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय-धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित, न्याय-धर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है (सत्यार्थ० नवम० समु०)।

मुक्ति में भौतिक शरीर या इन्द्रियों के गोलक जीव के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं जिनके द्वारा वह मुक्ति के आनन्द को भोगता है। मन्त्र कहता है—**यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते** जहाँ आनन्द और आनन्द देने वाले पदार्थ हैं, जहाँ मुक्ति के आनन्द को प्राप्त मुक्तात्मा पुरुष विराजमान हैं। **कामस्य यत्राप्ताः कामा तत्र माममृतं कृधि** जहाँ संकल्प मात्र से ही सब कामनाओं की तृप्ति हो जाती है, उस लोक का मुझे पथिक बनाइये।

जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से जीव भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दीखते हैं और नहीं दीखते, उन सब में घूमता है। सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के सामने हैं, सबको देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है, उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। मुक्ति का समय छत्तीस सहस्र बार सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है, उतने समय पर्यन्त आत्मा मुक्ति का आनन्द भोगता है (स०प्र० नव०समु०)।

पवित्रता

जितना-जितना मनुष्य पवित्रता को धारण करता है उतना-उतना ही आनन्द अधिक प्राप्त करता हुआ मुक्ति के समीप जाता है। पवित्रता प्राप्त करने हेतु देने का स्वभाव बनाना चाहिये। किसी से प्राप्ति की इच्छा न करे। चोरी करने व दूसरे की सम्पत्ति को लूटने का यत्न न करे। दो सगे भाई प्रेम से रहते थे। घर में कलह न हो इसलिये पृथक्-पृथक् हो जाये। एक दिन दोनों के गेहूँ के ढेर बाहिर खेत में पड़े थे। छोटे भाई की पर्याय गेहूँ की रक्षा की आ गई। उसने विचार किया कि बड़ा भाई अधिकांश बाहिर रहता है। उसका परोपकार करने में अधिक समय व्यतीत होता है। उसने 5 मन अपने गेहूँ बड़े भ्राता के गेहूँ में मिला दिये। दूसरी बार बड़े भाई की पर्याय आई। उसने विचार किया कि छोटा भाई छोटा होने के कारण सहायता के योग्य है। उसी प्रकार बड़े भाई ने छोटे भाई के गेहूँ में 5 मन अपने गेहूँ मिला दिये। इस प्रकार देने की प्रवृत्ति से दोनों में प्रेम का आनन्द बढ़ा। उपासक व दानी बनना ही मनुष्य के लिये मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

—आचार्य बलदेव

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

द्वितीय समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न-146. किस कारण से धूर्त लोग साधारण जनों को ठगते हैं?

उत्तर-अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र या पदार्थ विद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और उन्माद आदि मानस रोगों का नाम भूत-प्रेतादि धरते हैं। उनका औषध सेवन और पथ्यादि उचित व्यवहार न करके उन धूर्त, पाखण्डी, महामूर्ख, अनाचारी, स्वार्थी, भंगी, चमार, शूद्र, म्लेच्छादि पर भी विश्वासी होकर अनेक प्रकार के ढोंग, छल, कपट और उच्छिष्ट भोजन, डोरा, धागा आदि मिथ्या मन्त्र, यन्त्र बांधते, बंधवाते फिरते हैं। वे अपने धन का नाश, सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ाकर दुःख देते फिरते हैं।

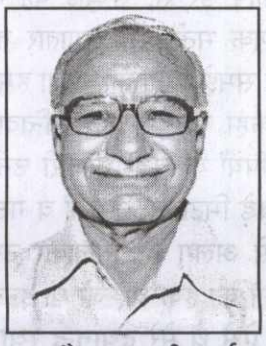

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न-147. जब कोई बुद्धिमान् व्यक्ति इन धूर्त, पाखण्डी लोगों को जूता, दण्डा वा चपेटा, लात मारे, तो इन धूर्तों की क्या स्थिति होती है?

उत्तर-तब इन धूर्तों के भूत, प्रेत, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं, क्योंकि उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ यह ढोंग होता है।

प्रश्न-148. क्या किसी पर राहु, केतु, सूर्यादि ग्रह क्रूर होकर नहीं चढ़ते हैं?

उत्तर-नहीं, यह बिल्कुल सत्य नहीं है, जैसे यह पृथिवी जड़ है वैसे ही राहु, केतु, सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ नहीं कर सकते। ये चेतन नहीं हैं, जो क्रोधित होकर दुःख और शान्त प्रसन्न होकर सुख दे सकें।

प्रश्न-149. क्या जो यह संसार में राजा, प्रजा, सुखी-दुःखी हो रहे हैं, यह ग्रहों का फल नहीं है?

उत्तर-नहीं, ये सब हमारे पाप-पुण्यों का फल है।

प्रश्न-150. तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उत्तर-नहीं, जो इ समें अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित आदि विद्या है वही सच्ची और जो फल की लीला है वह सब झूठी है।

प्रश्न-151. क्या जो जन्म-पत्र है, वह निष्फल है?

उत्तर-हाँ, वह जन्म-पत्र नहीं, किन्तु उसका नाम शोक-पत्र रखना चाहिए क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है, तब उसको आनन्द होता है, परन्तु जब पाखण्डी ज्योतिष और पुरोहित सन्तानों पर ग्रहों का चढ़ना बताकर डराते हैं, तब वही जन्म-पत्र शोक-पत्र बन जाता है।

प्रश्न-152. क्या शीतला, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि ढोंग हैं?

उत्तर-बिल्कुल ढोंग हैं। यह स्वार्थी लोगों की भोले-भाले लोगों को ठगने की लीला है। उनसे पूछना चाहिए क्या तुम्हारे झूठे मन्त्र, तन्त्र, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से बचा सकेंगे? उनसे यह भी पूछना चाहिए कि तुम अपने घर में क्या किसी को मरने और दुःखों से बचा सकते हो? तो वह निरुत्तर हो जाते हैं।

प्रश्न-153. क्या इन पाखण्डी, धूर्त, ज्योतिषी आदि की लीला छोड़ने योग्य है?

उत्तर-हाँ, जितनी लीला, रसायन, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि करना चाहते हैं, उन सभी को महापापी समझना चाहिए।

प्रश्न-154. ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियों को क्या-क्या नहीं करना चाहिए और क्या करना चाहिए?

उत्तर-ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियों को विषयों की कथा, विषयी लोगों के संग, विषयों का ध्यान, एकान्त सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्मों से पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा व पूर्ण विद्या को प्राप्त करावें।

प्रश्न-155. किस आयु तक माता, किस आयु तक पिता तथा किस आयु तक आचार्य बालक-बालिकाओं को शिक्षा दे?

उत्तर-जन्म से 5 वर्ष तक बालक, बालिकाओं को माता, 6 से 8वें वर्ष तक पिता और 9वें वर्ष के प्रारम्भ में द्विज अपनी सन्तानों का उपनयन (जनेऊ) करके आचार्यकुल में अर्थात् जहां पूर्व विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, उपदेश करें, भेज देवें।

क्रमशः अगले अंक में....

thearyasamaj.org

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिये

किसी विद्वान् कवि ने महर्षि दयानन्द के बारे में निम्न शिक्षाप्रद भजन लिखे हैं—

बताएँ दयानन्द क्यों जग में आया, सुनो लाभ क्या उससे भारत ने पाया।
किया फिर से प्राचीन गौरव को जाग्रत, सकल जग में वेदों का डंका बजाया।
भूल गए थे नाम तक भी हम अपना, ऋषि ने हमें आर्य कहना सिखाया।
मिटाई सभी कायरता हिन्दुओं की, सुदृढ़ वीर निर्भीक फिर से बनाया।
समझे थे हिन्दू धर्म अपना कच्चा, दयानन्द ने आके पक्का बताया।
पाखण्डी विरोधी उठे कांप डर से, सच्चाई का नाद जब उसने बजाया।
किरानी, कुरानी, पौराणिक मठों पर, लगातार तर्कों का गोला गिराया।
मसीहा और मुस्लिम यह समझे ऋषि को, सजा हमको देने खुदाबन्द आया।
सभी सत्य प्रेमियों ने कहा यह, सुखद शान्तिदायक यह संदेश लाया।
भटकते थे कब्रों पर ऋषियों के बच्चे, पुजारी उन्हें उस प्रभु का बनाया।
अनेक विधवाओं के दुखड़े मिटाकर, अछूतों व गऊओं का संकट मिटाया।
हमारे ही भाई जो हमसे अलग थे, मिलाकर उन्हें छातियों से लगाया।
न नारी को विद्या के पढ़ने का हक था, जो था इनका हक इनको दिलाया।

तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी

तुम्हें क्या बताएं दयानन्द क्या थे, वे शेरे-वतन हिन्द के रहनुमा थे।
बताया कि बकवास है बुतपरस्ती, चलाती है दुनिया को फकत एक हस्ती।
तुम्हीं ने हमें एक बनना सिखाया, तुम्हीं ने हमें नेक बनना सिखाया।
मिटाया दुनिया का तुमने अन्धेरा, किया तूने नवजागरण का सवेरा।
बताया कि पाप सहना है गुलामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी।
पत्थर की पूजा को झूठा बताया, निराकार ईश्वर का गुण गाया।
महिलाओं को वेद जिसने पढ़ाया, उन्हें हर दिशा में आगे बढ़ाया।
छुआछूत के तम को जिसने मिटाया, हिन्दी का हिन्द में फिर गीत गाया।
लिया जिसने वेदों का सहारा, वह जीता सभी से किसी से न हारा।
विजय जिसने पंडों पर काशी में पाई, किया सिद्ध धोखा है पत्थर पुजाई।
ध्वजा जिसने ओ३म् की हाथों में थामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी।
सन्ध्या, हवन, यज्ञ करना सिखाया, वेदों का जिसने हमें पथ सिखाया।
मजारों पर जाने से जिसने हमें रोका, ईसाइयत का कहा फक्त यह है धोखा।
दयानन्द स्वामी अगर तुम न आते, तो मुमकिन है वेदों को हम भूल जाते।
मजारों पर जा-जाकर हम सर पटकते, फकीरों के झासों में आकर भटकते।
कभी जाकर लिंगों पर पानी चढ़ाते, अविद्या, अनाचार पल-पल बढ़ाते।
दयानन्द ऋषिवर अगर तुम न आते, तो मुमकिन है हिन्दू यहाँ बच न पाते।
नहीं हिन्द में हिन्दू पड़ते दिखाई, यहाँ फकत होते हैं मुसलमान ईसाई।
तुम्हारी दया से मिली जिन्दगानी, वतन को मिली उसकी खोई जवानी।
वतन के लिये जीना मरना सिखाया, जहर भी मिले तो पीना सिखाया।
फलक-ए-शहादत के जगमग सितारे, भगतसिंह, रोशन, बिस्मिल हमारे।
फांसी के फन्दों पर हंसकर जो झूले, शहादत को कोई इनकी कैसे भूले।
दयानन्द से इन्कलाब इनमें आया, गोरी हुकूमत का तख्ता गिराया।
निजामी दरिन्दों ने जब जुर्म ढाया, सभी मन्दिरों में था सन्नाटा छाया।
हुई दरिन्दों के संग आर्यों की लड़ाई, यहाँ भी विजय आर्यों ने पाई।
नहीं टिक सके आर्यों पर निजामी, तो ऐसे थे मेरे दयानन्द स्वामी।
इस हिन्दू समाज को बरबाद होने से दयानन्द के सेवकों ने कैसे बचाया—

(ऋषिभक्त पं० लेखराम आर्यमुसाफिर की दिवानगी)

लिफाफा हाथ में लाकर दिया जिस वक्त माता ने।
लगे झट खोलकर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को॥
लिखा था उसमें कुछ हिन्दू धर्म खोने को उद्यत हैं।
जो आ सकते हो खत को देखते ही आओ बचाने को॥
मुसाफिर ने पढ़े जिस वक्त यह अलफाज उस खत के।
तो धोकर हाथ जल्दी से, हुए तैयार जाने को॥
उठा बिस्तर पहन कपड़े किताबें हाथ ले अपने।
कहा नौकर से ला इक्का मैं हूँ तैयार जाने को॥
कहा माँ ने ऐ बेटा अभी तू आके बैठा है।
फिर हो गया तैयार जाने को॥
तू माता और पत्नी को कुछ ऐसा भूल जाता है।
नहीं आता महीनों तक हमें सूरत दिखाने को॥
यदि सुध-बुध हमारी तू नहीं लेता न ले बेटा।
मगर लड़का लबेदम है नहीं खाता है खाने को॥
दया कर इस पै कुछ तूं और न ले अब नाम जाने का।
दवा करवा उसे ले जा, हकीमों को दिखाने को॥
यह सुनकर बात माता की मुसाफिर हंस के यूं बोला।
जो मरता है मर जाये बला से एक मेरा बेटा।
मैं जाति के बहुत से लाल जाता हूँ बचाने को॥
मुलाजिम भी सवारी उस समय ले करके आ पहुंचा।
लो माता जी नमस्ते मैं तो हूँ मजबूर जाने को॥
सवार होकर पहुँचे वह जिस जाँ की जाना था।
बचाया हिन्दुओं को जाके यह अफसाना है गाने को॥
सुबह को तार यह पहुंचा कि लड़का चल बसा जग से।
तो बोले फिक्र ही क्या है हर एक आया है जाने को॥
मुसाफिर धन्य तुमको आप थे संसार के प्यारे।
जो वैदिक धर्म की खातिर छुरा आये थे खाने को॥

ओ३म्

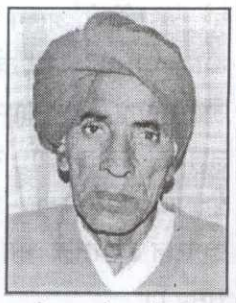

आज हमारे राजनेता लोग आर्य संस्थाओं में भी राजनीति का प्रवेश कराकर आर्यसमाजों को भी बरबाद करने पर तुले हुए हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया है कि राजनेताओं की गलत बातों का खण्डन आर्यसमाज ही कर सकता है।

अत: आर्य संस्थाओं में घुसकर अपनी स्वास्थ्य पूर्ति के लिए सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे बड़े राजनेताओं के पिल्लों से मेरी प्रार्थना है कि उन्हें अपने बड़े राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से अवश्य डरना चाहिये। किसी के अच्छे-बुरे का फल तत्काल प्राप्त होता न देखकर आप यह मत विचारो कि सभी कर्मों का फल भविष्य में नहीं मिलेगा। कर्मफल से कोई बच नहीं सकता, क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जो निराकार परमात्मा की उपासना छोड़कर दूसरों की उपासना करता है वह सुख को प्राप्त कभी नहीं हो सकता किन्तु सदा दु:ख में ही पड़ा रहता है (आर्याभिविनय)।

उत्तम विचारों से मनुष्य देवता तथा गलत विचारों से राक्षस बन जाता है। यह मनुष्य पर निर्भर है कि वह विचारों से जीवन तथा जगत् को नरक या स्वर्ग बनाकर जीये। उत्तम विचारों के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग परम आवश्यक है।

आज हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता हावी होने के कारण पैसे को ही सब कुछ समझा जाने लगा है। इसी से पाप, अधर्म, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि बढ़े हैं। यह सब धन के लिए हो रहा है। सब धन के लिये भाग रहे हैं। केवल धन की सोच स्वार्थ व अहंकार को बढ़ाकर पतन की ओर ले जाती है। मानवतावादी भावना गायब हो रही है। आज आदमी के पास सब कुछ होते हुए भी स्वास्थ्य, शान्ति, चैन, परिवार की एकता, प्रेम व संतोष नहीं है। एक कवि ने मनुष्य को सचेत किया कि—

बहुत गई थोड़ी रही अब अज्ञानी चेत।
फिर पाछे पछतायेगा जब चिड़िया चुग गई खेत॥
इस जीवन में खूब कमाये तूने हीरे-मोती।
याद रखना यारो कफन में जेब नहीं होती॥

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना परमात्मा द्वारा प्रदत्त वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए की थी जिसके कारण संसार में सुख-शान्ति पैदा की जा सकती है। लेकिन आज बड़े दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि आज नकली आर्य अपने नाम के आगे आर्य लिखने वाले ही आर्यसमाज को बरबाद करने पर तुले हुए हैं। अधिकतर आर्य नेता बनकर अपनी स्वार्स्थपूर्ति में लगे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा है कि आर्यसमाज के नेताओं की आवश्यकता नहीं है, किन्तु सेवकों की आवश्यकता है।

अत: मेरी आर्य सदस्यों से प्रार्थना है कि नेता न बनकर आर्यसमाज के सेवक बनने का प्रयास करें, क्योंकि कितना ही अच्छा धर्म क्यों न हो जब तक उसके नियमों व सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करके दिखाने वाले लोग नहीं होंगे तब तक वह धर्म उन्नति नहीं कर सकता। शेष पृष्ठ 6 पर....

thearyasamaj.org

आर्यसमाज के नियमों का एक अनुशीलन

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

द्वितीय नियम

ईश्वर की सत्ता के सिद्ध हो जाने पर स्वाभाविक रूप में यह प्रश्न सामने आता है कि ईश्वर का स्वरूप कैसा है? ईश्वर को मानने वाले सारे के सारे मतवादी यह स्वीकार करते हैं कि इस जगत् का निर्माता, व्यवस्थापक (पालक) और संहारक ईश्वर ही है। अत: यह स्वत: सिद्ध हो गया है कि ईश्वर का शुद्ध स्वरूप वही है जो कि इन तीनों कार्यों को कर सके। ईश्वर के ऐसे शुद्ध स्वरूप का ही निर्देश करते हुए द्वितीय नियम में कहा है—''ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।'' वस्तुत: ऐसे स्वरूप वाला ही बिना किसी अड़चन के जगत् सम्बन्धी तीनों कार्यों को कर सकता है।

आज ईश्वर के मानने वालों ने उसके ऐसे विचित्र स्वरूपों की कल्पना की हुई है कि जिसको पढ़ और सुनकर बड़ा आश्चर्य होता है और तब एक बुद्धिमान् कह उठता है कि यदि ईश्वर का यही स्वरूप है तो उसको मानने की जरूरत ही नहीं है और अधिकतर नास्तिक इसीलिए ही हैं। एक विचारक लिखता है कि ऐसे ईश्वर को मानने की क्या ज़रूरत है, जिसके शैतान तो बस में आया नहीं और आदम की सजा हमें दे रहा है। आश्चर्य तो यह है कि आज तक भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ। मैं ऐसे ईश्वर या धर्म को क्यों मानूं, जिसके अनुसार स्वर्ग में प्रवेश केवल उनके लिए ही हो, जो किसी विशेष पर ईमान लाते हैं, चाहे उनका जीवन भ्रष्ट क्यों न हो। क्या कोई व्यक्ति ऐसे अपराधी को अच्छा मानने के लिए तैयार होगा, क्योंकि वह किसी विशेष पर ईमान लाता है?

परन्तु आर्यसमाज के इस द्वितीय नियम में युक्तिसंगत, बुद्धिगम्य ईश्वर का स्वरूप दर्शाया गया है। जो ईश्वर की अपेक्षा और कार्य के अनुकूल ही है। इस नियम में ईश्वर के गुण, विशेषण दर्शाये गए हैं। वे प्राय: एक-दूसरे पर कार्य-कारण रूप से निर्भर हैं। जैसे कि निराकार ही किसी सीमा में सीमित न होने से सर्वशक्तिमान् हो सकता है, क्योंकि एकदेशी की शक्ति समय, स्थान में सीमित होती है। सर्वशक्तिमान् ही पूर्णत: न्यायकारी हो सकता है। अत: यहाँ ईश्वर का स्वरूप कार्य के अनुरूप है। नियम के अन्तिम शब्दों में कहा है—'उसी की उपासना करनी योग्य है, क्योंकि यह स्पष्ट सी बात है कि जब वह ही इस संसार का कर्त्ता-धर्त्ता है, तो वह ही एकमात्र वन्दनीय और उपास्य है। ऐसे शुद्ध, पूर्ण स्वरूप वाले की उपासना से ही उपासना का अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सकता है। उसको छोड़कर या उसके स्थान पर पैगम्बर, अवतार, गुरु, देवी, देवता, बाबा, माता, पीर, कब्र, मड़ी-मसान आदि से ही प्रार्थनायें, मिन्नतें, अरदासें करना और उन्हीं का ही नाम-स्मरण करना अनमेल बात है। वैसे एकमात्र ईश्वर के उपासक तो कुछ विरले ही हैं।'

इस स्थिति को देखकर किसी ने क्या ही यथार्थ कल्पना की है कि मैं एक दिन एक बहुत बड़े नगर की सड़क के किनारे खड़े हुए क्या देखता हूँ कि आधुनिक वाद्ययन्त्रों से सुसज्जित एक जुलूस आ रहा है, जिसमें लाखों की संख्या में मनुष्य बड़े जोश से नारे लगाते हुए आ रहे हैं, जिनके मध्य में एक सजी हुई आधुनिक कार में ईसामसीह बैठे हैं। मैं यह सब देखकर कुछ सोचने ही लगा कि इतने में क्या देखता हूँ कि उसके बाद उससे भी अधिक जोश में सज-धजकर एक और शोभायात्रा आ रही है। जिसके मध्य में हजरत मुहम्मद विराजमान हैं। इस प्रकार एक के बाद एक अद्भुत वेश में पैगम्बर, गुरु आदि का जुलूस आता है और अन्त में क्या देखता हूँ कि मरियल से घोड़े पर भद्दे से वेश और उपेक्षित रूप में परमेश्वर की शोभायात्रा आ रही है, जिसमें केवल पांच-छ: वृद्ध मनुष्य ही हैं।

वस्तुत: आज की दुनिया में ईश्वर के स्थान पर पैगम्बर, अवतार, गुरुओं की तो बहुत पूछ है परन्तु ईश्वर के लिए व्यवहार में कुछ भी स्थान नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि उसको स्वयंभू, खुदा (खुद+आ) मानते हुए भी उसकी अनेक शकलें बनाने का प्रयास किया जाता है। परमेश्वर को सर्वव्यापक, पूर्णकाम, शुद्ध, प्रकाशक मानते हुए भी अपनी भावना की भावुकता में उसको भी अपने समान समझकर जगाने, नहलाने, वस्त्र पहनाने, खिलाने, सुलाने का अभिनय किया जाता है। **क्रमश:....**

एक बड़ा छल है अनेकता में एकता का दावा

भाषा के आधार पर अलग-अलग प्रान्त, मजहब के आधार पर अलग अलग कानून, जात-पात के आधार पर अलग-अलग सुविधाएं-ये व्यवस्थाएं देश को जोड़ नहीं रही हैं, अपितु बांट रही हैं। इनके कारण विषमता, द्वेष और लड़ाई झगड़े बढ़ रहे हैं। ऐसी विषमताओं को **'अनेकता में एकता'** का नाम देना देश के लोगों के साथ एक बड़ा छल है।

एक मजहब वालों पर आप उनके तथा-कथित पवित्र स्थान पर जाने के लिए करदाताओं का अरबों रुपया खर्च कर रहे हैं तो क्या उन करदाताओं को दर्द नहीं होता। एक जाति वालों को 40 प्रतिशत अंक आने पर आप डाक्टर बना देते हैं और ऊँचे पदों पर बिठा देते हैं, दूसरी तरफ 80 प्रतिशत अंक वालों को आप बाहर रख रहे हैं तो उनके मन में द्वेष पैदा नहीं होता क्या। देशहित में आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण लगाया जाए, पर एक मजहब वाले कहते हैं कि उनके मजहब में सन्तान निरोधन की मनाही है। उस मजहब के लोगों के नाराज होने के डर से कोई भी राजनैतिक दल अब जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण की बात नहीं कर रहा। एक मजहब वाला आदमी एक साथ चार तक पत्नियां रख सकता है जबकि दूसरे मजहब वाला एक साथ एक से अधिक पत्नी नहीं रख सकता। इसलिए दूसरी पत्नी रखने के लिए वह आदमी मजहब बदल लेता है। एक मजहब वालों को अपने साथ तलवार रखने का कानूनी अधिकार है जो कहने को तो मजहबी चिन्ह है पर जरूरत पड़ने पर वह हथियार है। दूसरे मजहब वालों को यह अधिकार नहीं है। उत्तर भारत के लोग दक्षिण भारत में जाते हैं, पूर्व के पश्चिम में जाते हैं, आदि, अलग-अलग भाषाओं के कारण बोल चाल आदि व्यवहार में समस्याएं आती हैं। तो क्या ये सब विषमताएं एकता के चिन्ह हैं। जो लोग कहते हैं कि ये विभिन्नताएं एकता के चिन्ह हैं उनकी बुद्धि और नीयत पर शक होता है। देश की एकता केवल सरहद पर तैनात वीर नौजवान सैनिकों के कारण है, देश में अनेकता के कारण नहीं।

अनेकता व्यक्तिगत विषयों में रहती है जैसे कोई व्यक्ति कब सोता है, कब जागता है, क्या खाता है, क्या पहनता है, क्या काम धन्धा करता है आदि। इस प्रकार के व्यक्तिगत विषयों में सब स्वतंत्र रहते हैं। परन्तु सामाजिक और राष्ट्रीय विषयों में न स्वतन्त्रता होती है और न ही विषमता रहती है। देश के सभी कानून, सभी व्यवस्थाएं देशहित में सभी के लिए समान रूप में होनी चाहिएं जैसे सड़क पर बाईं और चलने का नियम सबके लिए एकसा है। कोई भी कानून या व्यवस्था किसी मजहब, जातपात या प्रान्त के आधार पर न हो। सारे देश में राष्ट्रभाषा पढ़ाई जानी चाहिए और सभी प्रान्तीय सरकारों की और केन्द्र की भाषा राष्ट्रभाषा ही होनी चाहिए। स्थानीय तौर पर अन्य भाषाएं पढ़ी/पढ़ाई जा सकती हैं। देश में सभी कानून मानवता और समता के आधार पर बने हों। किसी भी मजहब के लिए सरकार की तरफ से कोई भी धन व्यय न किया जाए। हज सब्सिडी पूरी तरह बन्द हो। देशहित में भूमि की सुरक्षा के लिए मुर्दा गाड़ने पर प्रतिबन्ध लगे। जनसंख्या नियन्त्रण के लिए प्रभावी कानून बनाया जाए। सभी को अपनी योग्यता बढ़ाने के और अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने के अवसर समान रूप से उपलब्ध हों। जन्म की जातपात को और ऊँच नीच की भावना को पूरी तरह समाप्त किया जाए। तभी देश में प्रेम, सद्भाव और देशभक्ति पनप सकती है। अत: एकता में ही एकता है, अनेकता में तो विघटन है।

—कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, 0172-4010679

विशेष सूचना

आपका शुल्क समाप्त हो गया है।

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से आग्रह है कि जिस माह आपका शुल्क समाप्त हो, कृपया उसी माह में अपना नवीन पंजीकरण शुल्क भेज दें ताकि आपकी सदस्यता समाप्त न हो और आपको आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्रिका लगातार मिलती रहे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० व आजीवन शुल्क 1500/- रु० मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के पते पर भेजें। -संपादक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज मोहदीनपुर जिला रेवाड़ी	25 से 26 अप्रैल 2015
2.	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाड़ी	9 से 10 मई 2015

—सभामन्त्री

thearyasamaj.org

आचार्य वेदमित्र जी द्वारा सम्पन्न यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम

(1) दिनांक 16 मार्च 2015 को रामा विहार दिल्ली में बृहद् यज्ञ के उपरान्त संस्कार शिविर आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थी तथा अध्यापक विद्यमान थे। आचार्य जी ने बाल्यकाल में बालक के मस्तिष्क में सात्त्विक संस्कारों को संचित करने का विशेष अवसर बतलाया। मनोवैज्ञानिक आचार्य बालक में धर्म-संस्कार प्रदान कर देता है। इसी काल को ब्रह्मचर्य कहा जाता है, क्योंकि ज्ञान से उत्तम पदार्थ कोई और नहीं होता। चरक, कपिल, दयानन्द इसी काल में आचार्य की कुक्षि में तैयार किये गये थे। प्राणायाम, आसन एवं ध्यान की विधि भी बतलायी गयी। राहुल आर्य का विशेष सहयोग रहा।

(2) दिनांक 21 मार्च को आर्य समाज चन्द्रपाल भैणी महम में बाल संस्कार यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी के सान्निध्य में युवाओं व स्त्री-पुरुषों ने जनेऊ लेकर यज्ञ सम्पन्न किया। आचार्य जी ने ब्रह्मचर्य तथा माँ के सन्तान निर्माण पर अपने व्याख्यान दिये। ब्रह्मचर्य हेतु बालकों की माताओं ने मारधाड़ वाली फिल्मों को न देखने की प्रतीज्ञा भी की। आचार्य जी ने अभिमन्यु तथा पितामह भीष्म के गर्भ की चर्चा से माताओं में ऐसे प्रेरणा भरी कि सभी जनेऊ लेने लग गई। इसी प्रकार बहन दयावती तथा श्री सुशील आर्य व श्री सत्यपाल जी के मधुर भजन उपदेश भी हुए।

(3) 22 मार्च 2015 को वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा रोहतक द्वारा वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में संस्कार यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें 5 से 10 वर्ष के छात्र-छात्राओं को यज्ञ प्रशिक्षण तथा योगासन तथा बालसंस्कार हेतु उपदेश हुआ। बालकों को आचार्य जी ने अल्प समय में मन्त्र भी कण्ठस्थ करवाये। अन्त में श्री सतीश जी आर्य तथा उनके सभी सहयोगियों को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम में सैकड़ों बालकों ने भाग लिया।

(4) 20 से 26 मार्च 2015 तक गुरुकुल आश्रम भऊ आर्यपुर रोहतक में बालशिविर लगाया गया। आचार्य जी के सान्निध्य में बालकों को यज्ञ, योगासन का अभ्यास कराया गया। बाहर के छात्र भी सम्मिलित हुए। श्री सुनील शास्त्री तथा आनन्द आर्य ने सुन्दर व्यवस्था की।

न्याय-व्यवस्था

ध्यान से सुनलो सब नरनार देश की जनता और सरकार,
ये बदलेगा इस प्रकार हिन्दुस्तान का नक्शा। टेक।।

रिश्वत लेता देता हो गर कोई नौकर सरकारी,
सात साल काले पानी जायदाद जब्त हो सारी।।
हमारी बात मान लें आप, चाहे कोई बेटा हो या बाप,
करै पंचायत इंसाफ ये विधान का नक्शा।।1।।

खाद्य पदार्थ में जो कोई भ्रष्ट चीज मिलवादे।
बिठा के नौका में राजा उसे सिन्धु में गिरवादे।।
गर तुलवादे कोई घाट, जिसके कमती होवैं बाट,
उसके ऊपर धर दो पाट, ये बेईमान का नक्शा।।2।।

व्यभिचारिणी स्त्री को लोहे का पलंग लाल कर,
पुरुष हुए जो व्यभिचारी भट्ठी में उसे डालकर,
बाल कर उनके नीचे आग, जलाए जां दोनों निर्भाग,
कुटुम्ब दे उनकी मोहता त्याग ये शैतान का नक्शा।।3।।

उचित मुनाफे पर ले देवे व्यापारी हो ऐसा।
नाजायज ढंग से ना लेवै एक किसी का पैसा।।
जैसा देखा जिसका माल, वैसी देवै कीमत डाल,
फिर सुधरैगा तत्काल, गरीब किसान का नक्शा।।4।।

सुल्फा और शराब धतूरा जो पीवें मुस्टण्डे।
सात महीने जेल में रखो पांच रोज के डण्डे,
जो कोई खावै अण्डे मांस, राजा उनको करै हताश,
कुत्ते फाड़ें उनकी लाश ये हैवान का नक्शा।।5।।

होवै मनादी सख्त मना है गन्दे चित्र लगाना।
शूट करैं उन मर्दों को जो करते भेस जनाना।
गाना गन्दा करैं हमेश जिनसे बिगड़ रहा है देश,
करो मोदीजी को पेश ये **चन्द्रभान** का नक्शा।।6।।

—**स्व० पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक,** संस्थापक 'शांतिधर्मी' जीन्द

अनमोल वचन

भलेराम आर्य, सांघीवाले

- यदि निडर होकर जीवन बिताना है तो केवल परमात्मा से डरो।
- जिसके पास उम्मीद है वह लाख बार हारकर भी नहीं हारता।
- संसार में न कोई तुम्हारा मित्र है और न शत्रु। तुम्हारे अपने विचार ही शत्रु और मित्र बनने के लिए उत्तरदायी हैं।
- जैसा व्यवहार की तुम दूसरों से अपेक्षा रखते हो, वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के प्रति करो।
- बहुत काम खराब ढंग से करने की बजाय, थोड़े काम अच्छे ढंग से करना बेहतर है।
- मान-सम्मान सदा औरों को देने के लिए होता है, औरों से लेने के लिए नहीं।
- प्रगति की ज्वाला को हम सदा अपने हृदय में प्रज्वलित रखें।
- सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।
- बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज है, अपना समय और अच्छे संस्कार। ध्यान रखें एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ विद्यालयों के बनाने से भी बेहतर है।
- धीरज मत खोओ। हीनता और हताशा तुम्हें शोभा नहीं देती। अपने आत्मविश्वास को बढ़ाओ, फिर से प्रयास करो, तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
- सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं, जिन्हें जितना अधिक दूसरों पर छिड़कोगे, उतनी ही सुगन्ध आपके भीतर समाएगी।

संकलन : भलेराम आर्य, सांघी, जिला रोहतक

सत्य को ग्रहण करने और असत्य.... पृष्ठ 4 का शेष.....

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियम नंबर आठ में लिखा है कि **''अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।''** लेकिन आज जो नकली आर्य हैं वे विद्या का नाश और अविद्या की वृद्धि करने में लगे हैं तो वैदिक धर्म की अवनति ही होगी और हो भी रही है तो संसार में सुख-शान्ति हो ही नहीं सकती।

जब तक मनुष्य हठ, छल और अभिमान को छोड़कर सत्य प्रीति के साथ परस्पर मित्रता करके परोपकार करने के लिये तन, मन, धन, से प्रयत्न नहीं करते, तब तक उनके सुखों और विद्या आदि उत्तम गुणों की उन्नति हो नहीं सकती (ऋग्वेद)।

दुष्ट व्यक्ति का संग किसी भी सूरत में अच्छा नहीं होता। दुष्ट व्यक्ति और सांप इन दोनों में सांप फिर भी अच्छा है, क्योंकि सांप तो कालवश सिर्फ एक ही बार काटता है पर दुष्ट तो पग-पग पर हानि पहुंचाता है। कोयला जलता हुआ तो हाथ को जला देता है और ठण्डा हो तो हाथ काले कर देता है।

वे ही लोग असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच आदि हैं, जो आत्मा में और जानते, वाणी से कुछ और बोलते और करते कुछ और ही हैं। वे कभी अविद्या रूप दु:खसागर से पार हो आनन्द को प्राप्त नहीं हो सकते। जो आत्मा मन वाणी और कर्म से निष्कपट एक-सा आचरण करते हैं वे ही देव, आर्य सौभाग्यवान् सब जगत् को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक में अतुल सुख भोगते हैं।

लोभ सभी मानसिक रोगों की जड़ मानी गई है। समस्त पापों की जड़ लोभ को कहा गया है। पाप का बाप लोभ कहलाता है। लोभ की कोई सीमा नहीं होती है। लोभ का पेट कभी भरता नहीं है। ज्यों-ज्यों धन-सम्पदा सुख भोग के साधन सुविधाएं आदि बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों मन लोभी और लालची होता जाता है। धन का लोभ पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार आदि का सबसे बड़ा कारण है। लोभ इंसान को अंधा बना देता है। आवश्यकता से अधिक धन के कारण आदमी में अहंकार पैदा हो जाता है। लोभी आदमी कभी परोपकार का काम नहीं कर सकता। इन्सानियत की गिरावट का सबसे बड़ा कारण घमण्ड या अहंकार है।

अहंकार में तीनों गये धन-वैभव व वंश।
न मानो तो देख लो रावण, कौरव, कंस॥

रोटी खाओ घर की,
गाली खाओ समाज की और
काम करो दयानन्द का।

इस सिद्धान्त को अपनाने से ही हम नरक जीवन को स्वर्ग जीवन में बदल सकते हैं। यदि हम अभी नहीं संभले तो रोना पड़ेगा, नरक में गर्क होना पड़ेगा, हमारा ऐसा हाल होगा, जो बताने के काबिल नहीं है।

भेंटकर्त्ता-सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

thearyasamaj.org

पण्डित शोभाराम प्रेमी : एक प्रेरक व्यक्तित्व

आर्यसमाज के प्रारम्भकाल से ही वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में भजनोपदेशकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उस समय जबकि यातायात के साधन भी अत्यल्प थे, पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशकों ने नगर-नगर व ग्राम-ग्राम में पहुँचकर अपने भजनोपदेश से वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाई है। उन्हीं पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशकों में आदरणीय पंडित शोभाराम प्रेमी थे, जिनका गत दिनों 6.3.15 को 101 वर्ष की आयु में देहावसान हुआ। युवावस्था में आप आर्यजगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संपर्क में आये। उनके सान्निध्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों के अध्ययन से आपकी विचारधारा में ऐसा परिवर्तन हुआ कि आपने वेदप्रतिपादित स्वामी दयानन्द के विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन आहूत कर दिया। आपने स्वरचित गीतों के माध्यम से वैदिक विचारधारा का नगर-नगर और ग्राम-ग्राम घूमकर अनेक कष्टों को सहन करते हुए प्रभावशाली ढंग से प्रचार-प्रसार किया।

वर्तमान में यातायात के अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। सड़कों का निर्माण भी खूब हुआ है। वैज्ञानिकों ने चलभाष का आविष्कार करके विश्व को एक दूसरे के निकट ला दिया है। अपने घर परिवार एवं इष्ट-मित्रों की कुशलता का समाचार जब चाहो तुरन्त मिल जाता है। परन्तु जिस समय की यहाँ चर्चा की जा रही है, उस समय स्थिति इसके विपरीत थी। मार्ग ऊबड़-खाबड़ तथा यातायात के साधन भी बहुत कम थे। कई-कई मील पैदल चलना पड़ता था। मोबाइल की तो उस समय कल्पना तक नहीं थी। प्रचारार्थ घर से बाहर निकलने के पश्चात् महीनों तक परिवार की कुशलता का पता नहीं चल पाता था। उसी युग के एक कवि ठाकुर उदयसिंह ने तत्कालीन उपदेशकों की दशा का इस प्रकार मार्मिक चित्रण किया है—

शीश पर बिस्तर और बगल में छतरी लगी,
एक हाथ बैग दूजे बाल्टी सम्भाली है।
दिन गया धक-धक में रात गई बक-बक में,
कभी है अपच और कभी पेट खाली है।
जंगल में दशहरा और सड़क पर सलूना हुआ,
मोटर में होली और रेल में दिवाली है।
पुत्र मरा सावन में पत्र मिला फागुन में,
ठाकुर उपदेशकों की दशा भी निराली है।

उन्हीं वैदिक धर्म के दीवानों में श्रद्धेय पं० शोभाराम जी प्रेमी थे, जिन्होंने शारीरिक कष्टों की कुछ भी परवाह न करते हुए अपना सारा जीवन महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार में लगा दिया।

आपका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक रहा है। प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में आपने न केवल स्वयं को अपितु अनेक रोगियों को उचित परामर्श देकर स्वस्थ एवं निरोग किया है।

आपकी प्रचार शैली अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली रही है। आप सदा मंच के धनी रहे हैं। आपने अपने जीवन में अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की। अनेक वर्षों तक स्वामी कल्याणदेव जी के साथ रहकर अनेक ग्रामों व नगरों में शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर कार्य किया। हिन्दी सत्याग्रह में जेल की यातनाएं सहीं। आपने भारत के तीन प्रधानमंत्रियों (पं० जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री और चौ० चरणसिंह जी) के विशेष आग्रहों पर उनके मंचों से वैदिक विचारधारा का प्रचार करके आर्यसमाज का गौरव बढ़ाया। आपने अपने जीवनकाल में अनेक ऐसे शिष्य बनाये, जो आज बड़े ही प्रभावशाली ढंग से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। इसके साथ ही आपने वैदिक सिद्धान्तानुकूल हजारों गीत लिखे हैं। आपके चुने हुए गीतों की लगभग तीन सौ पृष्ठों की पुस्तक **'प्रेमी भजन मंजूषा'** के नाम से प्रसिद्ध दानवीर स्व० चौ० मित्रसेन जी आर्य के आर्थिक सहयोग से कुछ वर्ष पहले प्रकाशित हो चुकी है। जीवन के लगभग 80 वर्ष की दीर्घावधि में जो प्रेमी जी ने कार्य किया है, उसे देखते हुए अनेक आर्यसमाजों, संस्थाओं ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया है। कुछ वर्ष पहले श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी ने मेरठ में प्रेमी जी का जोरदार अभिनन्दन किया था। एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई थी, जिसका सम्पादन श्री धर्मवीर जी शास्त्री ने किया।

मैं नियमित रूप से प्रेमी जी के साथ कभी नहीं रहा। यदा कदा आर्यसमाजों के उत्सवों में उनके दर्शन करने तथा भजनोपदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। एकान्त में भी वार्तालाप करने का अवसर मिलता रहा। प्रेमी जी के गीतों, प्रवचनों तथा व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बहुत पहले ही मैंने उन्हें गुरु रूप में स्वीकार किया था।

निग़ाहें कामिलों पर पड़ ही जाती हैं जमाने की,
कहीं छिपता है अकबर फूल पत्तों में निहाँ होकर?

विस्तार भय से अधिक न लिखते हुए मैं प्रेमी जी के प्रति हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

—सत्यपाल मधुर, अध्यक्ष,
भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्,
दिल्ली मो० 9899351375

स्वास्थ्य-चर्चा...

कैसे बचें स्वाइन फ्लू से?

स्वाइन फ्लू श्वसन संस्थान (रेस्पिरेटरी सिस्टम) से सम्बंधित वायरस से फैलाने वाली एक गंभीर बीमारी है। आज सम्पूर्ण मानव जाति इससे त्रस्त है। इस बीमारी से बचना ही सबसे बेहतर उपाय है।

स्वाइन फ्लू रोग का प्रचार-जब कोई व्यक्ति खांसता या छींकता है तो उसके मुंह से कफ के छोटे-छोटे कण निकलते हैं, इन्हीं कफ के कणों में वायरस छिपे रहते हैं जब कोई स्वस्थ व्यक्ति इन कफ की बूंदों के संपर्क में आता है, तो वह इन वायरस से संक्रमित हो जाता है।

लक्षण-तेज बुखार, नाक का लगातार बहना, गले में खराश, अत्यधिक थकान, छींकें आना, तेज सिरदर्द होना। ये ऐसे लक्षण हैं जो सामान्य सर्दी, जुकाम एवं फ्लू में भी होते हैं। अंतर ये है की स्वाइन फ्लू में ये गंभीर किस्म के होते है। कभी कभी उल्टी दस्त जैसे पाचन संस्थान के लक्षण भी साथ में होते हैं। यदि उपरोक्त में से 3-4 लक्षण भी लगातार बने रहें और दवा लेने के बावजूद लक्षणों में आराम न हो तो तुरंत आलस्य त्याग कर बड़े अस्पताल में जाएँ।

इनका रखें विशेष ध्यान-बुजुर्ग, छोटे बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को इस रोग के प्रति विशेष ध्यान रखना चाहिए। साथ ही वे लोग जो दिल गुर्दे या फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित हैं, इन्हें जुकाम खांसी का शुरुआती स्तर पर ही इलाज कर लेना चाहिए।

स्वाइन फ्लू से बचाव एवं उपचार-हम हमेशा से सुनते आये हैं (prevention is better then cure) यह बात स्वाइन फ्लू के मामले में तो बिलकुल फिट बैठती है।

(1) खांसी या छींक आने पर मुंह पर रुमाल रखें या टिशू पेपर उपयोग करें।

(2) नाक साफ करने, शौचालय जाने के बाद एवं खाना खाने से पहले साफ पानी एवं साबुन से हाथ धोएं। अकेली यह आदत अनेक संक्रामक बिमारियों से बचा सकती है।

(3) भीड़-भाड़ वाली जगहों, जैसे शादी-विवाह, मेलों आदि में जाने से बचें।

(4) जुकाम, खांसी, फ्लू से पीड़ित लोगों से थोड़ी दूरी बनाकर रखें।

(5) पानी पीने में आलस्य न करें, पानी खूब पीयें ताकि शरीर से विष पेशाब, पसीने आदि के द्वारा निकलता रहे।

(6) पर्याप्त आराम जरूर करें।

आयुर्वेद के उपाय

(1) काढ़ा पीयें-सर्दी, जुकाम, खांसी एवं फ्लू में आयुर्वेद के काढ़े बहुत फायदेमंद हैं। साथ ही स्वाइन फ्लू से बचाव के लिए भी ये बहुत उपयोगी हैं। इसके लिए गिलोय का एक छोटा टुकड़ा, 1-2 तुलसी पत्र, 1-2 काली मिर्च, 1 लौंग, अदरक छोटा टुकड़ा, इन सब को कूटकर 2 कप पानी में उबालें। 1 कप शेष रहने पर थोड़ा शहद डालकर पी लें। काढ़ा पीने के बाद 15-20 मिनट तक ठंडा पानी न पियें न ही ठंडी, खुली हवा में जाएँ। यदि व्यक्ति की ताशीर गर्म है तो उपरोक्त द्रव्यों की मात्रा काम कर दें।

गर्भवती एवं प्रसूति महिलाएं जिनके बच्चे छोटे हों उन्हें न दें। यह काढ़ा 2-3 दिन तक सुबह-शाम पी सकते हैं, साथ ही इसके जैसा गोजिह्वाड़ी क्वाथ या काढ़ा आता है। यह भी सर्दी, खांसी, फ्लू में बहुत उपयोगी है।

(2) गरम दूध में चुटकी भर हल्दी डालकर पीना बहुत फायदेमंद है।

(3) तुलसी, काली मिर्च, लौंग एवं अदरक की चाय भी सर्दी, खांसी, फ्लू में बहुत फायदेमंद है।

(4) **आयुर्वेद की दवाएं**-आयुर्वेद की कुछ औषधियां सर्दी, खांसी, जुकाम एवं फ्लू में बहुत फायदेमंद है, किन्तु इन्हें चिकित्सक की राय से ही सेवन करें। जैसे-लक्ष्मी विलास रस, सितोपलादि चूर्ण, त्रिकटु चूर्ण, अभ्रक भस्म, संजीवनी वटी आदि। **(साभार-वनौषधिमाला)**

thearyasamaj.org

मूर्तिपूजा के सोलह दोष

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम बनाये हैं। इनमें दूसरा नियम है—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। ये सब ईश्वर के नाम हैं तथा ये सब गुण ईश्वर में विद्यमान हैं। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में भी ईश्वर के सौ नाम बताए हैं तथा उन नामों की विशद व्याख्या की है। इससे भिन्न भी परमात्मा के असंख्य नाम हैं। क्योंकि जैसे ईश्वर के अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव हैं, वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं।

क्या मनुष्य द्वारा निर्मित मूर्ति में ये गुण हो सकते हैं? सर्वव्यापक निराकार की प्रतिमा बनाई जा सकती है? जगत रचयिता ईश्वर को मूर्ति में स्थापित किया जा सकता है? अत: मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है। वेद में कहीं भी मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं है। आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल में भी कहीं मूर्तिपूजा का संकेत नहीं है। ईश्वर व्यापक है वह मूर्ति में व्याप्य नहीं हो सकता। जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो किसी एक वस्तु में उसकी भावना करना तथा अन्यत्र न करना ऐसी बात है कि जैसी चक्रवर्ती राजा को सत्ता से छुड़ा के एक छोटी-सी झोपड़ी का स्वामी बनाना। यदि मूर्ति में ईश्वर है तो पुष्प, चन्दन, धूप, घण्टा, घड़ियाल में भी है। अन्न, जल, नैवेद्य में भी है। फिर ये सब अर्पित करने का क्या औचित्य है। मनुष्यों का ज्ञान जड़ की पूजा से नहीं बढ़ता इससे ध्यान में कमी अवश्य आ सकती है। मूर्तिपूजा करके ज्ञानी तो कोई नहीं हुआ प्रत्युत अज्ञानी बन मनुष्य जीवन व्यर्थ गंवाया है। मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है। मूर्तिपूजा से मनुष्य की बुद्धि कुंठित हो जाती है। गलत और अनैतिक कार्य कर मूर्ति के समक्ष क्षमायाचना कर पापों से मुक्ति समझ लेना मानव की प्रवृत्ति बन गई है। इससे उसके जीवन में सुधार के स्थान पर और अधिक गिरावट आती है। महर्षि दयानन्द ने एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा के सोलह दोष बताए हैं।

पहला-साकार मूर्ति में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता, क्योंकि उसको मन तुरन्त ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमता है कभी किसी अंग पर कभी दूसरे अंग पर। परन्तु निराकार अनन्त परमात्मा में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता तो भी अन्त नहीं पाता। चंचल भी नहीं रहता किन्तु उसी के गुण-कर्म-स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है। साकार में मन फँसा रहता है, परन्तु स्थिर नहीं होता जब तक निराकार में न लगावे, क्योंकि निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है। **दूसरा**-मन्दिरों के निर्माण में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं यह धन किसी विद्यालय, औषधालय में लगे तो जनता के काम आये। मन्दिरों में रहने वाले प्रमादी हो जाते हैं। **तीसरा**-मन्दिरों में स्त्री-पुरुषों का सदा मेला लगा रहता है। अधिक भीड़भाड़ में भगदड़ से जनहानि, लड़ाई-झगड़ा रोग, व्यभिचार आदि उत्पन्न होते हैं। **चौथा**-उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरुषार्थरहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गंवाता है। मूर्ति में ही आस्था मान कर्म छोड़कर भाग्य भरोसे रहकर जीवन को नरक बना लेते हैं। **पांचवां**-मन्दिरों के पुजारी नाना प्रकार की विरुद्ध स्वरूप नाम चरित्र युक्त मूर्तियों के कारण स्वयंमत न होकर विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ा के देश और जनता का नाश करते हैं। अनगिनत नाम से अनगिनत मूर्तियाँ बनाकर अपना स्वास्थ्य सिद्ध करते हैं। **छठा**-मूर्ति के भरोसे रहकर शत्रु का पराजय और अपना विजय माने बैठे रहते हैं। शत्रुओं का मुकाबला न कर पराधीन भटियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अपने विधि दु:ख पाते हैं। इतिहास गवाह है कि हमलावरों ने मूर्तियों को तोड़कर धन प्राप्त किया और मन्दिर के पुजारियों ने न स्वयं उनका मुकाबला किया न योद्धाओं को मूहुर्त की आड़ में लड़ने दिया। जड़ की शरण में रहकर उनकी बुद्धि भी जड़ बन गई। **सातवां**-परमेश्वर के उपासना के स्थान हृदय और उसके नाम पर पाषाणादि मूर्तियां धरते हैं तो ईश्वर उन दुष्ट बुद्धि वाले का सत्यानाश क्यों न करें? पुजारियों के बैठने के आसन या नाम पर कोई पत्थर धरने की बात कहे तो गाली देकर मारने को तैयार हो जाते हैं। **आठवां**-भ्रमित होकर हजारों मन्दिरों में घूम-घूमकर दु:ख पाते हैं। अपना कार्य छोड़कर धन नष्ट करते हैं। कहीं चोर उन्हें पीड़ित करते हैं तो कहीं ठग उन्हें ठग लेते हैं। परमार्थ और परोपकार सब समाप्त हो जाता है। **नौवां**-दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्री-गमन, मद्य, मांस, लड़ाई-बखेड़ों में व्यय करते हैं जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दु:ख होता है। **दसवां**-माता-पिता माननीयों का अपमान करते हैं तथा भाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं।

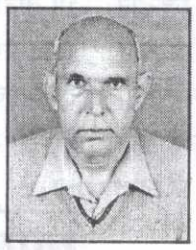

देशराज आर्य

ग्यारहवां-उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता है या चोर ले जाता है तब हाहा कर रोते हैं, व्यर्थ कष्ट उठाते हैं। **बारहवां**-पुजारी परस्त्रियों के संग और पुजारिन परपुरुषों के संग से प्राय: दूषित होकर स्त्री-पुरुष के आपसी प्रेम भाव व आनन्द को खो बैठते हैं। **तेरहवां**-स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरुद्ध भाव होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। **चौदहवां**-जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है, क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्त:करण द्वारा आत्म में अवश्य आता है। **पन्द्रहवां**-सुगन्धि वस्तु पुष्पादि पदार्थ वायु को अयोग्य बनाये रखते हैं उन्हीं पुष्प को तोड़कर मूर्ति पर चढ़ाकर कीच में मिला दिय जाते हैं जहाँ सड़कर दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। **सोलहवां**-पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सब का जल मृत्तिका के संयोग होने से मोरी व कुण्ड में आकर सड़कर इतना दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का। सहस्त्रों जीव उसमें पड़ते, सड़ते और मरते हैं। इस प्रकार ऐसे-ऐसे अनेक दोष मूर्तिपूजा के करने से होते हैं। इसलिए सज्जन लोगों के लिए मूर्तिपूजा त्यक्तव्य है।

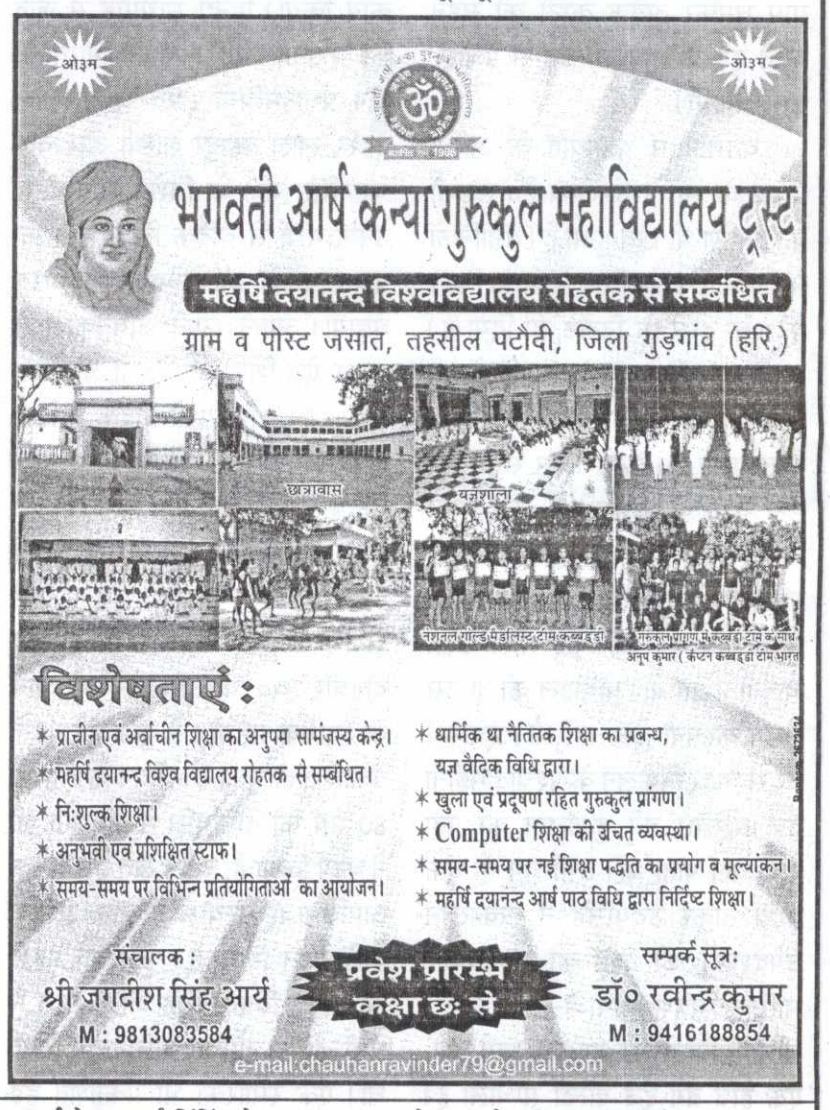

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।